Roll No. : ..... Total Pages : 6

2381-P

II Year Arts Examination, 2017

HINDI LITERATURE

Paper – I

(काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड-अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-अ)

1. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(इकाई-I)

(i) केशव किस प्रकार के आचार्य थे?

(ii) भिखारीदास द्वारा रचित किन्हीं दो ग्रन्थों के नाम लिखिए।

(इकाई-II)

(iii) ऋतु वर्णन के लिए कौन-सा रीतिकालीन कवि जाना जाता है?

(iv) पद्माकर का वास्तविक नाम क्या था?

(इकाई-III)

(v) कवि भूषण द्वारा रचित प्रामाणिक रचना कौन-सी है?

(vi) घनानंद किस आश्रयदाता के मीर मुंशी थे?

(इकाई-IV)

(vii) कवि देव को सर्वाधिक सम्मान किस आश्रयदाता से मिला?

(viii) बिहारी सतसई में कुल कितने दोहे हैं?

(इकाई-V)

(ix) रीति काव्य की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

(x) रीतिकालीन काव्य को कितने भागों में विभाजित किया जाता है?

(खण्ड-ब)

(इकाई–I)

2. 'अंगद-रावण संवाद' के आधार पर केशव के काव्य का वैशिष्ट्य वर्णित कीजिए।

3. ''भिखारीदास के मन में भक्तिभाव भी पर्याप्त गहरा था।'' आपकी पाठ्यपुस्तक में संकलित भिखारीदास के काव्यांश के आधार पर कथन की समीक्षा कीजिए।

(इकाई–II)

4. आपकी पाठ्यपुस्तक में संकलित काव्यांश के आधार पर सेनापति द्वारा किए गए रामकथा वर्णन का वैशिष्ट्य वर्णित कीजिए।

5. कवि पद्माकर के जीवन परिचय व कृतित्व का वर्णन कीजिए।

(इकाई–III)

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

इंद्र जिमि जंभ पर वाड़व सुअम्भ पर,
रावण सदम्भ पर रघुकुल-राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।।

दावा द्रुम-दण्ड पर चीता मृग झुण्ड पर,

'भूषण' वितुण्ड पर जैसे मृगराज है।।

तेज तम-अंश पर, कान्ह जिमि कंस पर,

त्यों मलेच्छ-वंश पर सेर शिवराज है।

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

कारी क्रूर कोकिला ! कहाँ को बैर काढ़ती री,

कूकि कूकि अब ही करे जो किन कोरी लै।

पैंड़े परे पापी ये कलापी निसद्यौस ज्यों ही,

चातक ! घातक त्यौं ही तू हू कान फोरी लै।

आनंद के घन प्रानजीवन सुजान बिना,

जानि के अकेली सब घेरौ दल जोरी जे।

जो लौ करैं आवन विनोद बरसावन वे,

तौ लों डरारे, बजमारे घन घोरि लै।।

(इकाई–IV)

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

कथा मैं न कंथा मैं न तीरथ के पंथा मैं,

न पोथी मैं, न पाथ मैं, न साथ की वसीति में।

जटा मैं न मुण्डन न तिलक त्रिपुंडन मैं,

न नदी कूप कुंडन अन्हान दान रीति मैं।।

पीठ मठ मण्डल न कुंडल कमंडल,
न माला दण्ड मैं देव देहरे की भीति मैं।
आपु ही अपार पारावार प्रभु पूरि रह्यो,
पाइए प्रकट परमेसर प्रतीति मैं।।

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहीं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जल होय।।
नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारी।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु, बारक बारनु तारि।।

(इकाई–V)

10. रस को स्पष्ट करते हुए सभी रसों व उनके स्थायी भावों का वर्णन कीजिए।

11. काव्यदोष से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट करते हुए किन्हीं दो काव्य दोषों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(खण्ड-स)

(इकाई–I)

12. मतिराम के जीवन परिचय का वर्णन करते हुए उनके रचना संसार के वैशिष्ट्य का वर्णन कीजिए।

(इकाई–II)

13. पाठ्यपुस्तक में संकलित अंश के आधार पर पद्माकर द्वारा की गई गंगा स्तुति का वर्णन कीजिए।

(इकाई–III)

14. "कलमपरस्त और खड़गहस्त कवि भूषण कवि ने चंदबरदाई की काव्य-परम्परा को रीतिकाल में पुनः सजीव कर दिया था।" कथन की समीक्षा कीजिए।

(इकाई–IV)

15. "बिहारी बहुज्ञ कवि थे।" सतसई के दोहों का सोदाहरण विवेचन करते हुए कथन के विषय में अपना मत लिखिए।

(इकाई–V)

16. रीतिबद्ध काव्यधारा की प्रवृत्तियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।